सूरह — एक कहानी

सूरह अत-तीन

अंजीर

पूरा सफ़र — बेहतरीन साँचा, और सबसे नीची पस्त —
जैसे कोई बड़े प्यार से बच्चे को सुनाता है

सूरह नं. 95 • 8 आयतें • मक्की

नूरानी इल्म
nooraniilm.com • मुफ़्त सदक़ा-ए-जारिया ईबुक

एक नज़र में सूरह

वत्-तीनि वज़्-ज़ैतून
1. क़सम है अंजीर और ज़ैतून की।

व तूरि सीनीन
2. और तूर-ए-सीना की।

व हाज़ल्-बलदिल्-अमीन
3. और इस अमन वाले शहर की।

लक़द ख़लक़्नल्-इंसान फ़ी अह्सनि तक़्वीम
4. बेशक हमने इंसान को बेहतरीन साँचे में बनाया।

सुम्म रददनाहु अस्फ़ल साफ़िलीन
5. फिर हमने उसे सबसे नीचे की पस्त में लौट दिया।

अ लैसल्-लाहु बि-अह्कमिल्-हाकिमीन
8. क्या अल्लाह सब हाकिमों से बड़ा हाकिम नहीं?

चार क़समें, चार जगहें

बेटा, यह छोटी सूरह दो फलों और दो जगहों की क़सम से शुरू होती है — और उलमा ने इसमें एक ख़ूबसूरत तरतीब ढूँढी है जिसे जानना चाहिए।

'वत्-तीनि वज़्-ज़ैतून — क़सम है अंजीर और ज़ैतून की — व तूरि सीनीन — और तूर-ए-सीना की — व हाज़ल्-बलदिल्-अमीन — और इस अमन वाले शहर की।'

अंजीर और ज़ैतून, बेटा, ज़मीन के सबसे बा-बरकत खानों में से हैं। अंजीर: मीठा, नरम, और इसमें कुछ ज़ाया नहीं — न छिलका फेंकने को, न गुठली थूकने को; पूरा फल ग़िज़ा है। ज़ैतून: जिससे वो तेल निकलता है जिसे क़ुरआन ने कहीं और एक मुबारक दरख़्त का तेल कहा — खाने के लिए, रौशनी के लिए, और शिफ़ा के लिए।

मगर बहुत से मुफ़स्सिरीन कहते हैं कि यहाँ फल से ज़्यादा कुछ है। कहा गया है कि अंजीर और ज़ैतून उस सरज़मीन की तरफ़ इशारा करते हैं जहाँ ये कसरत से उगते हैं

— फ़िलिस्तीन और शाम की सरज़मीन, ईसा (अलैहि0) और बहुत से अंबिया की सरज़मीन। तूर-ए-सीना वो जगह है जहाँ मूसा (अलैहि0) ने अपने रब से कलाम किया। और 'यह अमन वाला शहर' मक्का है, मुहम्मद ﷺ का घर।

बेटा, तरतीब नज़र आ रही है? तीन मुक़द्दस सरज़मीनें, तीन बड़े नुक़्ता-ए-वही की निशानदेही करती हुईं — गोया अल्लाह इंसानियत पर उतरी हुई पूरी हिदायत की तारीख़ की क़सम खा रहे हैं: ईसा से, मूसा से, और अब मुहम्मद ﷺ से। और ग़ौर कीजिए कि मक्का को 'अल-बलद अल-अमीन' कहा गया — अमन वाला शहर, ज़मीन की वो वाहिद जगह जहाँ अमन ख़ुद क़ानून बना दिया गया।

और यह सब किस बात पर क़सम है? इंसान की हक़ीक़त पर।

बेहतरीन साँचा

'लक़द ख़लक़्नल्-इंसान फ़ी अह्सनि तक़्वीम — बेशक हमने इंसान को बेहतरीन साँचे में बनाया, बेहतरीन क़द-ओ-क़ामत और मुतवाज़िन बनावट में।'

बेटा, 'तक़्वीम' का मतलब है शक्ल देना, सीधा खड़ा करना, मुनासिब बनावट और तवाज़ुन अता करना। और अल्लाह फ़रमाते हैं: उसका भी सबसे बेहतरीन — 'अह्सनि तक़्वीम'।

पहले जिस्मानी पहलू सोचिए। सारी मख़लूक़ात में आप सीधे खड़े होते हैं — आप रेंगते नहीं, अपना जिस्म ज़मीन पर घसीटते नहीं; आपका चेहरा आसमान की तरफ़ उठाया गया है। आपका हाथ एक भारी पत्थर भी उठा सकता है और सुई में धागा भी डाल सकता है। आपकी आँखें रंग देखती हैं, आपके कान हज़ार आवाज़ों में फ़र्क़ करते हैं, आपकी ज़ुबान ज़ुबान पैदा करती है, और आपका चेहरा इतने बारीक तासुरात रखता है कि एक हल्की सी तब्दीली दूसरे को बता देती है कि आप क्या महसूस कर रहे हैं।

और जिस्म से आगे, बेटा: वो अक़्ल जो एक ऐसे मुस्तक़बिल का मंसूबा बना सकती है जो उसने देखा भी नहीं, वो ज़मीर जो चुभता है, वो हाफ़िज़ा जो पूरी उम्र उठाए फिरता है, और — सबसे बड़ी अता — वो रूह जो अपने ख़ालिक़ को जानने और उससे मोहब्बत

करने की सलाहियत रखती है। किसी फ़रिश्ते को आज़ाद इख़्तियार नहीं दिया गया; किसी जानवर पर हिसाब नहीं। आपको दोनों दिए गए।

बेटा, इस आयत को आपके साथ दो काम करने चाहिए। इसे आपका सर उठाना चाहिए — उस मख़लूक़ को हक़ीर मत समझिए जिसे अल्लाह ने 'बेहतरीन' कहा। आपका चेहरा, आपका क़द, आपके हालात जो भी हों, उन्होंने आपका साँचा चुना और इंसानी शक्ल को अपना बेहतरीन काम क़रार दिया।

और इसे अपने आप से आपकी तवक़्क़ोआत भी बढ़ानी चाहिए: जो चीज़ इस मेयार पर बनाई गई हो, वो इसलिए नहीं बनाई गई थी कि जानवर की तरह जिए — खाना, आराम और ख़्वाहिश के पीछे, और बस।

सबसे नीचे की पस्त

और फिर गिरावट आती है: 'सुम्म रददनाहु अस्फ़ल साफ़िलीन — फिर हमने उसे सबसे नीचे की पस्त में लौट दिया।'

बेटा, उलमा दो बुनियादी तशरीहात पेश करते हैं, और दोनों क़ाबिल-ए-याद हैं। एक: बुढ़ापा और कमज़ोरी — मज़बूत जिस्म दोबारा कमज़ोरी की तरफ़ लौटता है, तेज़ ज़ेहन भूलने की तरफ़; जो पच्चीस साल की उम्र में 'अह्सनि तक़्वीम' था, वो नब्बे साल में प्याला नहीं उठा सकता। दूसरी, और जिसे सूरह की अगली आयत सपोर्ट करती है: आग की सबसे नीची गहराइयाँ, उन लोगों के लिए जिन्होंने अपना दिया हुआ साँचा ज़ाया कर दिया।

और बेटा, एक तीसरा मानी इन दोनों के दरमियान है, और वो आप अपनी आँखों से देखते हैं: इंसान जानवरों से भी नीचे उतर सकता है। जानवर खाने के लिए मारता है; सिर्फ़ इंसान लुत्फ़ के लिए मारता है। जानवर अपनी ज़रूरत लेता है; सिर्फ़ इंसान जमा करता है जब उसका पड़ोसी भूखा हो। सबसे बुलंद मुमकिन बनावट पा कर, इंसान सबसे पस्त मुमकिन रवैये का भी अहल है — क्योंकि वही आज़ाद इख़्तियार जो उसे उठाता है, वही उसे गिराता भी है।

यही वो त्रासदी है जिसका यह सूरह नाम ले रही है, बेटा: बनावट जितनी बुलंद, गिरावट उतनी गहरी। एक पत्थर अपनी बे-इज़्ज़ती नहीं कर सकता; एक इंसान कर सकता है।

'इल्लल्-लज़ीन आमनू व 'अमिलुस्-सालिहाति — सिवाए उन के जो ईमान लाए और नेक अमल किए — फ़-लहुम अज्रुन ग़ैरु मम्नून — उनके लिए वो अज्र है जो कभी नहीं टूटेगा, ख़त्म नहीं होगा, और जिस पर कोई एहसान नहीं जताया जाएगा।'

बेटा, इस्तिस्ना देखिए और यह कि वो कितना सादा है: ईमान और अमल। दिल में यक़ीन और आ'ज़ा में अमल। यही पूरी नजात है। और जो लोग बुढ़ापे में भी ईमान और कोशिश के साथ दाख़िल हुए — उलमा कहते हैं कि उनका अज्र तब भी लिखा जाता रहता है जब उनका जिस्म अमल के क़ाबिल नहीं रहता, क्योंकि नीयत बाक़ी रही। क्या ख़ूबसूरत बात है, बेटा: जो अमल आपने ताक़त में किए, वो कमज़ोरी आने पर भी कमाई करते रहते हैं।

फिर कौन सी चीज़ तुम्हें झुठलाने पर आमादा करती है?

'फ़-मा युकज़्ज़िबुक ब'दु बिद्-दीन — तो इसके बाद कौन सी चीज़ तुम्हें जज़ा-ओ-सज़ा को झुठलाने पर आमादा करती है?'

बेटा, इस सवाल का ज़ोर महसूस कीजिए। यह सब कुछ देखने के बाद — मुक़द्दस सरज़मीनों के बाद, अपनी तख़्लीक़ के शरफ़ के बाद, यह देखने के बाद कि इंसान कैसे उठ और गिर सकता है — अब क्या बचा है जो आपको यह इनकार करने पर आमादा करे कि एक फ़ैसला होगा?

यह वही दलील है जो क़ुरआन बार बार देता है: अगर यह शानदार मख़लूक़ एक आरिज़ी इत्तिफ़ाक़ के सिवा कुछ नहीं, अगर आदिल और ज़ालिम दोनों एक ही तरह मिट्टी में ख़त्म हो जाते हैं, तो फिर सब कुछ बे-मानी है। बेटा, आपकी तख़्लीक़ का शरफ़ ख़ुद रोज़-ए-जज़ा की दलील है। जिस चीज़ को इतनी एहतियात से बनाया गया हो, उसका हिसाब यक़ीनन लिया जाएगा।

और फिर सूरह की आख़िरी आयत, वो सवाल जो मुक़दमा बंद कर देता है: 'अ लैसल्लाहु बि-अह्कमिल्-हाकिमीन — क्या अल्लाह सब हाकिमों से बड़ा हाकिम नहीं?'

बेटा, 'अह्कमुल-हाकिमीन' — फ़ैसला करने वालों में सबसे हकीम, सबसे आदिल। हर उस इंसानी अदालत के बारे में सोचिए जिसे आप जानते हैं: फ़ैसले ख़रीदे जाते हैं, शहादत गुम हो जाती है, ताक़तवर बच निकलता है, कमज़ोर कुचला जाता है, और ईमानदार जज भी अधूरी मालूमात के साथ काम करता है।

और फिर एक ऐसे मुंसिफ़ के बारे में सोचिए जो जानते हैं — जिन्हें बताया नहीं गया, बल्कि जिन्होंने देखा; जिन्होंने अमल के पीछे की नीयत देखी, उस दबाव को देखा जिसमें वो शख़्स था, वो पोशीदा नेकी जो किसी ने लिखी नहीं और वो पोशीदा बुराई जिसका किसी को गुमान नहीं। एक ऐसे मुंसिफ़ जिन्हें रिश्वत दी जा सकती है न धमकाया जा सकता है, और जिन्हें मुक़दमा समझाने के लिए किसी वकील की ज़रूरत नहीं।

बेटा, इस दुनिया के मज़लूमों के लिए यह आयत क़ुरआन की सबसे बड़ी तसल्ली है। हर वो ज़ुल्म जो कभी दर्ज नहीं हुआ, हर छीना हुआ हक़, हर वो इज़्ज़त जो एक झूट से तबाह कर दी गई — यह सब सबसे आदिल मुंसिफ़ के पास फ़ाइल है। और जब तक वो फ़ैसला न फ़रमाएँ, कुछ भी बंद नहीं हुआ।

और नबी ﷺ ने सिखाया कि जो शख़्स यह सूरह पढ़े, वो इस आख़िरी आयत पर पहुँच कर कहे: 'बला, व अना 'अला ज़ालिक मिनश्-शाहिदीन' — क्यों नहीं, और मैं इस पर गवाही देने वालों में से हूँ। इसे कहिए, बेटा, हर बार जब आप यह पढ़ें।

इस सूरह से क्या सीखा

1. अल्लाह ने ईसा, मूसा और मुहम्मद ﷺ की सरज़मीनों की क़सम खाई — हिदायत एक लंबी ज़ंजीर है, और आप उसके आख़िरी सिरे पर हैं।

2. आपको 'बेहतरीन साँचे' में बनाया गया — उस शक्ल को हक़ीर मत समझिए जिसे

आपके ख़ालिक़ ने अपना बेहतरीन काम कहा।

3. बुलंद बनावट गहरी गिरावट की गुंजाइश रखती है: वही आज़ाद इख़्तियार जो उठाता है, वही जानवरों से भी नीचे गिरा सकता है।

4. नजात सादा और मुकम्मल है: ईमान और नेक अमल।

5. ताक़त के दिनों के अमल कमज़ोरी और बुढ़ापे में भी कमाते रहते हैं — अभी बना लीजिए।

6. आपकी तख़्लीक़ का शरफ़ ख़ुद इस बात की दलील है कि रोज़-ए-जज़ा आना ही है।

7. हर वो मुक़दमा जो कभी सुना नहीं गया, 'सबसे आदिल मुंसिफ़' के पास फ़ाइल है — कहिए 'बला, व अना 'अला ज़ालिक मिनश्-शाहिदीन।'

या अह्कमल-हाकिमीन, हमें वो साँचा ज़ाया न करने दीजिए जिससे आपने हमें शरफ़ बख़्शा, और हमारा फ़ैसला अपनी रहमत से फ़रमाइए। आमीन।